कक्षा-III

पाठ 8 भारत में गौ-पालन

पाठ 9 हमारे उद्योग

पाठ 10 कृषि का प्रबंधन

पाठ 11 संतुलित आहार

पाठ 12 आइए भोजन पकाएं

8

भारत में गौ-पालन

हम अपने घर के आस पास बहुत सारे जानवरों को देखते हैं। इन्हें पालतू जानवर कहा जाता है। ऐसा ही एक जानवर है-गाय। आइए गौ-पालन के बारे में प्रीतम क कहानी से समझने का प्रयास करते हैं। प्रीतम एक प्रतिभावान बालक है जो एक नगर में रहता है। वह अपने माता-पिता के साथ बाजार जाता है। वह वहाँ से सब्जी खरीदता है। फिर वह दूध बेचने वाले (दुधिया) रामू के पास जाता है। रामू के पास एक बड़ी गौशाला है। वहाँ उसे बहुत सारे जानवर नजर आते हैं जिसमें प्रीतम एक गाय को पहचान लेता है।

चित्र 8.1 गौशाला

उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ को पढ़ने के पश्चात् आप:

- गाय और उसकी विशेषताओं की व्याख्या कर पाएंगे;
- गायों की रंगों द्वारा पहचान कर पाएंगे;
- गायों द्वारा लिए जाने वाले उत्पादों का विवरण दे पाएंगे;
- गायों को सुरक्षा व स्वास्थ्य की विवराणत्मक योजना तैयार कर सकेंगे; और
- गायों में होने वाली बीमारी और उपचार के बारे में जान सकेंगे।

8.1 गाय और उनकी उत्पति

प्राचीन भारतीय गाय का बहुत आदर करते थे। गाय को माता का दर्जा प्राप्त था। वर्तमान काल में भी गाय की पूजा की जाती है। गाय को गौ, गऊ और कामधेनु (क्योंकि वह सभी इच्छाएं पूरी करती है) कहा जाता है। कामधेनु स्वर्ग की दिव्य गाय है। वैदिक रचनाएं जैसे ऋग्वेद, यजुर्वेद, मैत्रेयी संहिता, गृहसूत्र, स्मृति, धर्मसूत्र में गाय के लिए अनेक मंत्र है। यह मंत्रोच्चार गायों से अधिक मात्रा में दूध प्राप्त करने हेतु, गायों को उपहार मानकर दरिद्रता दूर करना, गाय की पूजा करना और इच्छाओं की पूर्ति होने के लिए किया जाता है।

ऋषि बाल्मीकि की रामायण के अरण्य कांड, सर्ग-4 में कामधेनु के जन्म का विवरण मिलता है। यह गाय महात्मा वशिष्ट के आश्रम में रहती है और यज्ञ में आहुति हेतु सभी आवश्यक उत्पाद उपलब्ध कराती है। रामायण के बाल काण्ड में राजा कौशिक द्वारा बलपूर्वक गायों को बंदी बनाने के प्रसंग का वर्णन है। महात्मा वशिष्ठ ने अपनी शक्तियों का प्रयोग कर राजा कौशिक को पराजित किया। इसके पश्चात् राजा कौशिक अपना राज-पाट छोड़कर जंगल की ओर प्रस्थान करता है। वहाँ लंबे समय तक तप करने के पश्चात् वह विश्वामित्र कहलाए।

व्यास मुनि की महाभारत में कौरवों ने पांडवों के वनवास के 13वें वर्ष में गायों को बंदी बनाने का प्रयास किया था। भागवत् पुराण में भगवान श्री कृष्ण द्वारा सैंकड़ों गायों की किस प्रकार से रक्षा की गयी का विवरण है। भगवान कृष्ण के साथ ही गाय चरती और खेलती थी। भगवान श्री कृष्ण और अन्य गोपाल (गौ-पालक) गायों को चराते और भोजन कराते थे। अग्नि पुराण, गरुड़ पुराण और विष्णु पुराण में गायों की बीमारी और उनके औषधीय उपचार का विवरण मिलता है। कुछ पुराण गाय की उत्पत्ति देवताओं और राक्षसों द्वारा समुद्र मंथन से भी मानते हैं।

8.2 गाय की विशेषताएं

प्राचीन भारतीय गाय की पूजा करते थे। इसीलिए गाय के शरीर के विभिन्न अंगों में देवताओं का वास माना गया है। गायों के दोनों प्रकार की (अच्छी अथवा बुरी) विशेषताओं का वर्णन है। इसका निर्णय उनको निरीक्षण करने वाले निरीक्षक करते है। गायों के अनेक रंग जैसे लाल, सफेद, भूरा, सुनहरी आदि हो सकता है। इसी प्रकार उनके कान, आंखें एवं सींग अनेक रंगों के हो सकते हैं। शुक्रनीति में बैल के दांतों में आयु के अनुसार रंग परिवर्तन का विवरण है। गाय के शरीर पर नर्म

चित्र 8.2 गाय

बाल होते है। इन्हें अवतार कहा जाता है। यह अलग-अलग स्थान पर नजर आते हैं। गाय जिनकी आंखों में आंसू हों, दांत अधिक हो, टूटे सींग हों तथा विचित्र ध्वनि निकलती हों, उन्हें अच्छी गाय नहीं माना जाता है। किन्तु हमें उन्हें मारना नहीं चाहिए।

क्रियाकलाप 8.1

किसी भी आस पास रहने वाले दूधिया या गौशाला का भ्रमण अपने माता-पिता के साथ करें। गाय के विभिन्न अंगों की जानकारी लें।

क्रियाकलाप 8.2

चार गायों वाली गौशाला का चित्र लीजिए। उनके अंगों में रंग भरिए। रंगों का आधार आपके द्वारा देखी गयी विभिन्न रंगों की गाय होनी चाहिए।

पाठगत प्रश्न 8.1

1. उन वैदिक रचनाओं की सूची बनाइए जिनमें गायों के लिए मंत्र लिखे गए हैं।
2. उन रचनाओं का नाम लिखिए जिनमें श्री कृष्ण द्वारा गायों की सुरक्षा करने का वर्णन है।
3. उस गाय का नाम बताइए जिसे बलपूर्वक बंदी बनाने का प्रयास राजा कौशिक ने किया था?
4. संस्कृत भाषा में गाय के रहने के स्थान को क्या कहा जाता है?
5. किन पुराणों में गाय की बीमारी का वर्णन है?

8.3 गाय के दूध उत्पाद

प्रीतम ने रामू काका से पूछा, "काका आपने गाय को गौशाला में क्यों बांधा है?" दूध वाले रामू ने कहा, "प्रीतम, मेरी गाय बहुत अच्छी है। वह मुझे दूध देती है। मैं उनके बछड़े के दूध पीने के बाद बचा हुआ दूध अपने उपयोग के लिए लेता हूँ।"

ऋग्वेद गायों को किस प्रकार दुहना चाहिए इसकी चर्चा करता है। यह वेद उन प्रार्थनाओं का भी ज्ञान देता है जिनके करने से गायें शायद अधिक मात्रा में दूध देती है। दूध भगवान को अर्पण के लिए भी प्रयोग किया जाता था।

कौटिल्य के अर्थशास्त्र में गाय के दूध दुहने के अनेक मानकों का विवरण है। कुछ आयुर्वेदिक ग्रंथ दूध के गुणों की व्याख्या करते हैं। गौ-पालक गायों के थन पर तेल लगाते हैं। दूध की पहली धार धरती मां को अर्पित की जाती है। दूध की दूसरी धार बछड़े को तथा शेष दूध हमारे उपयोग के लिए इकट्ठा किया जाता है।

यह दूध एक मटके में एकत्रित किया जाता है। प्रीतम ने पूछा, "काका मटके में रखे दूध का क्या करना है?" रामू ने कहा, "इसे अपने घर ले जाकर गैस स्टोव पर गर्म करो। यह ध्यान रखना कि दूध उफन ना जाए। गैस स्टोव को बंद कर देना तथा मटके में ही दूध ठंडा होने का इंतजार करना।

दूध ठंडा होने पर उसे गिलास में डालकर भगवान को अर्पित किया जाता है। यह अर्पण ईश्वर को धन्यवाद स्वरूप किया जाता है। शेष दूध को दही में परिवर्तित किया जाता है। प्रीतम ने रामू काका से पूछा, "काका, इस दूध को दही में कैसे परिवर्तित किया जाता है?" रामू ने कहा, "एक छोटे नींबू का रस या पिछले दिन का दही गर्म किए हुए दूध में डाला जाता है। पूरी रात रखने के पश्चात् अगले दिन वह दही बनता है। दूध में उपस्थित जीवाणु उसे दही में परिवर्तित करते हैं।"

यदि दही में पानी मिलाया जाता है तो वह छाछ कहलाती है। छाछ पतली (diluted) होती है।

क्रियाकलाप 8.3

दूधिये से गाय का थोड़ा दूध लेकर दही बनाएं। दही बनाने के लिए नींबू रस या पिछले दिन के दही का प्रयोग करें। इसमें एक चम्मच चीनी मिलाकर ताजा दही का स्वाद लें।

क्रियाकलाप 8.4

गर्मी के मौसम में बहुत सारे लोग आपके घर आते हैं। उन्हें छाछ दें। बाजार में उपलब्ध छाछ को किस प्रकार बनाया जाता है? आप अपने बगीचे से कुछ कढ़ी पत्ते लें। उन्हें पानी के साथ दही में मिलाएं। इसमें स्वाद के अनुसार एक चुटकी नमक और थोड़ी सी पिसी मिर्च मिलाएं। इसके बार गिलास में डालकर आने वाले व्यक्ति को दें। पीने के बाद उनसे स्वाद के बारे में जानकारी प्राप्त करें।

? क्या आप जानते हैं

प्राचीन भारत में छाछ बनाने के लिए मटके का प्रयोग होता था। इसे लकड़ी से मथा जाता था। प्राचीन भारतीय महिलाएं मथते समय गीत गाती थी।

छाछ मथने से हमें मक्खन प्राप्त होता है। मक्खन प्राप्त करने के पश्चात् भगवान श्री कृष्ण को अर्पित किया जाता है। तत्पश्चात् मक्खन सभी व्यक्तियों को खाने के लिए दिया जाता है। यह शरीर को ताकत और पौष्टिकता देता है। ताजा मथा हुआ मक्खन मीठा, ठंडा और हाजमें के लिए हल्का होता है। मक्खन बुद्धिवर्धक भी है। पुराने मक्खन के खट्टे स्वाद के कारण वह अनेक बीमारियों को जन्म देता है।

गाय से प्राप्त होने वाला एक उत्पाद है-घी। इसे साफ किया हुआ (clarified) मक्खन (butter) कहा जाता है। जब मक्खन को किसी बर्तन में डालकर

ताप से गर्म किया जाता है, वह पिघलकर घी बन जाता है। ताजा बने घी से बुद्धि तेज होती है। साथ ही यह त्वचा, स्मृति, ताकत और पोषण का अच्छा स्रोत है। यह मानव शरीर को साफ करता है। इसका प्रयोग यज्ञ में आहुति के लिए भी किया जाता है। वैदिक काल में घी को जीवन की संज्ञा दी गयी है। व्यक्ति को कम से कम एक छोटा चम्मच घी का प्रयोग भोजन में अवश्य करना चाहिए।

गाय के ऐसे दो उत्पाद और हैं जिन्हें अच्छा माना जाता है। यह हैं-गौ मूत्र और गोबर। रामू आगे बताता है, "जब मैं छोटा था, लगभग तुम्हारी उम्र का तब मेरे बड़े-बुर्जुगों के पास गैस नहीं थी। वह जंगल से लकड़ी काटकर आग जलाते थे। जंगल में बहुत सारे जंगली जानवर मिलते हैं। इसलिए गायों को सुरक्षा की जरूरत होती है। इसीलिए उनके लिए अलग से एक शाला (गौशाला) का निर्माण किया गया। उन्हें दिन भर खाने के लिए घास, तिनके और पेड़ के पत्ते दिए जाते थे। इससे उनके शरीर में अपशिष्ट उत्पाद (waste product) का निर्माण होता था। यह गोबर और गौ मूत्र का निशचन (release) करती थी।"

गाय के गोबर को एक बाल्टी में इक्ट्ठा किया जाता था। गोबर से दीवारों की लिपाई की जाती थी। यह लिपाई झाड़ू के प्रयोग से घर में भी की जाती थी। गोबर को सुखाकर भोजन बनाने के लिए प्रयोग किया जाता था। गोबर को गोलाकार रूप में समान मोटाई रखते हुए बनाया जाता है। सूखने पर इन उपलों (Cow dung cakes) का प्रयोग किया जाता है।

गाय के गोबर को गौशाला में एकत्रित नहीं करना चाहिए। इसको इकट्ठा कर जल्दी से जल्दी गौशाला से हटा देना चाहिए। इसे धूप में फैलाकर सुखा देना चाहिए। इससे मक्खी और अन्य कीड़ों की रोकथाम होती है। ये कीट गोबर में अंडे दे सकते हैं। इसके विपरीत गाय के गोबर से गोबर गैस बनाने के लिए पाचक जीवों (digester) को खिलाया जाता है। यह ऊर्जा का बेहतर स्त्रोत है।

इसे भोजन पकाने के साथ-साथ कृषि उपयोगी खाद में प्रयोग किया जाता है। गाय के गोबर से वातावरण में प्रदूषण नहीं फैलता है। इसीलिए प्राचीन समय में घरों की दीवारों पर गोबर से लेप किया जाता था।

गौमूत्र को शुद्धिकरण प्रक्रिया के लिए भी प्रयुक्त किया जाता है। यह कुछ बीमारीयों की रोकथाम करने के साथ मिट्टी की उर्वरता बढ़ाता है। गौमूत्र कृषि कार्यों के लिए बेहद उपयोगी है।

गाय को मिलने वाले पांच उत्पादों के विवरण ऊपर दिया गया है। यह पांच उत्पाद हैं-दूध, दही, घी, गोबर और गौमूत्र। इन्हें सामूहिक रूप से पंचगव्य कहा जाता है। ये सभी उत्पाद व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से प्रयोग करने पर रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाते हैं। अनेक बीमारियों का इलाज पंचगव्य दवाईयों में उपलब्ध है।

? क्या आप जानते हैं

कुछ आयुर्वेदिक ग्रंथ जैसे राजा नल का पाकदर्पण, रघुनाथ का भोजनाकुथुल आदि पंचगव्य के गुणों की जानकारी देते हैं।

पाठगत प्रश्न 8.2

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

1. प्राचीन काल में गाय पालने वाले को ..... कहा जाता था।
2. गाय के रहने के स्थान को ..... कहते हैं।
3. कृषि क्षेत्र में प्रयोग करने पर गौमूत्र ..... की वृद्धि करता है।
4. गाय के पांच उत्पादों को ..... कहा जाता है।

5. ..... का प्रयोग यज्ञ में आहुति के लिए होता है।

6. दही में पानी मिलाने से पतली ..... प्राप्त होती है।

7. दूधिया गाय के दूध की पहली धार ..... माता को अर्पित करता है।

8.4 गाय की सुरक्षा और स्वास्थ्य

प्राचीन भारतीय समाज में गाय को एक महत्वपूर्ण जानवर माना जाता है। उसकी पवित्र जानवर मानकर पूजा की जाती है। गाय को माता का दर्जा दिया जाता है। अनेक प्राचीन भारतीय ग्रंथ गाय की सुरक्षा और स्वास्थ्य के लिए नियम बताते हैं। वैदिक रचनाएं यह मानती हैं कि गाय को चरने के लिए अच्छे खेत, रहने के लिए साफ जगह और पानी के लिए शुद्ध जल देना चाहिए। उन्हें चोर और जंगली जानवरों से भी बचाना चाहिए। गोबर तथा अन्य अपशिष्ट पदार्थों को साफ करके खाद में प्रयोग करना चाहिए। इससे वह अच्छा दूध देगी तथा यह नियमित प्रजनन करने में भी सहायक है।

? क्या आप जानते हैं

प्राचीन काल में गौशाला में एक दीपक जलाया जाता था। पक्षी जैसे-चिड़िया, तोता, कबूतर आदि को गौशाला में रखते थे। यह गायों के अच्छे स्वास्थ्य की परिचायक है। यह स्वास्थ्य प्रजनन भी सुनिश्चित करती है।

गौशाला में रहने वाली गाय को वातावरणीय प्रदूषण से बचाने के लिए साफ सुथरी जगह बनाने हेतु नियमित रूप से साफ कर होम करते हैं। यह कुछ जड़ी-बूटी और पौधों को मिलाकर तैयार किया जाता है। इससे गाय के स्वास्थ्य में वृद्धि होती है।

पद्म पुराण गाय को जंगली जानवर और पक्षियों से रक्षा करने का विवरण प्रस्तुत करता है। धर्म सूत्र किसी भी बांझ या गर्भवती गाय के खरीद-फरोख्त को वर्जित मानता है। गौशाला साफ और हवादार होनी चाहिए। अधिक से अधिक धूप

गौशाला में आनी चाहिए। गाय के गले में घंटी अवश्य बंधी होनी चाहिए। अधिकतर ग्रामीणवासी दीपावली (अमावस्या) के अगले दिन (New Moon day) पर अपनी गाय को सजाते हैं तथा बांधने में उपयोग में ली जाने वाली रस्सी की भी पूजा करते हैं। विभिन्न लोकगीत गाकर गायों के अलग-अलग अंगों की पूजा की जाती है। यह भी विदित है कि दीपावली अमावस्या को आती है। उन्हें गांव में घुमाया जाता है। मंदिर में भगवान या बरगद के पेड़ या किसी भी पवित्र पहाड़ के चारों ओर घुमाया जाता है। ऐसी मान्यता है कि इससे गाय की बीमारियों का उपचार होता है।

? क्या आप जानते हैं

भगवान श्री कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत की पूजा-अर्चना की है। समस्त ग्वालों ने अपनी गायों को पर्वत के चारों ओर घुमाया जिससे उनकी गाय की अनेक बीमारियां ठीक हो जाएं।

यह भी देखा गया है कि कई बार बछड़ा स्वयं अपनी मां गाय के पास नहीं जाना चाहता। ऐसी स्थिति में बछड़े को गाय के पस बांधना चाहिए। गौमूत्र छिड़कना चाहिए तथा बछड़े को अपनी मां के आस-पास घुमाना चाहिए। बछड़े को दूध तथा पानी पीने की अनुमति होनी चाहिए। कई बार मां गाय भी अपने बछड़े से दूर रहती है। इसलिए उनके बीच संबंध बढ़ाने के लिए बछड़े को मां गाय का दूध नमक मिलाकर दिया जाता है। इसके बाद बछड़े को थन के पास ले जाते हैं ताकि वह दूध पी सके। ऐसी अनेक विधि हमारे प्राचीन ग्रंथों में लिखी हुई है।

गाय को सुबह-शाम नहलाना चाहिए जिससे उनका तनाव कम हो जाए। विशेष तेल से उनकी मालिश की जानी चाहिए। इससे उनकी शारीरिक बीमारियां दूर होती हैं। साथ ही स्थानीय पशु चिक्तिसक से भी संपर्क कर गाय के स्वास्थ्य की नियमित जांज करनी चाहिए। जितना हो सके उपचार परंपरागत दवाईयों से कराना चाहिए।

क्रियाकलाप 8.5

अपने आस पास के क्षेत्र में गायों के लिए अच्छी घास, जड़ी-बूटी, शुद्ध पेयजल और खाने की व्यवस्था की जाए। अपने मित्रों से आग्रह करें कि वो भी हर हफ्ते आपने आस पास की गौशाला में गौ सेवा के लिए आएं।

पाठगत प्रश्न 8.3

1. दीपावली के पश्चात् गाय की किस प्रकार पूजा की जाती है?
2. किस पेड़ के आस पास चक्कर लगाने से गाय की बीमारियों का उपचार हो जाता है?

8.5 गाय की बीमारियां और उपचार

प्रीतम ने गाय का दूध लिया और रामू काका को धन्यवाद कहा। इसके बाद वह अपने माता-पिता के साथ अपने घर गया। रामू काका भी गायों को पास के मैदान में घुमाने के लिए लेकर गए। मैदान तक पहुँचने के लिए उन्हें एक सड़क पार करना जरूरी था। कार, जीप, बस आदि अनेक वाहन सड़क पर तेज रफ्तार से चल रहे थे। तभी एक तेज आती हुई कार ने गाय को टक्कर मार दी। गाय के पैर में खून आ गया। अनेक लोग उनके पास आ गए। कुछ लोगों ने उन्हें दवाई दी तथा कुछ ने गाय के पैरों में पट्टी बांधी। रामू काका को सात्वंना देकर कुछ लोग उन्हें अस्पताल ले गए। लेकिन गाय के लिए तो एक पशु चिकित्सक की आवश्यकता थी। डाक्टर के बाहर होने के कारण स्थानीय लोगों ने गाय के पैर पर जड़ी बूटी और पौधों का लेप लगाया। इस प्रकार की देसी दवाईयाँ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी स्थानतंरित होती है। इन्हें परंपरागत दवाईयाँ अथवा नाटू वैद्य कहा जाता है। इस प्रकार की दवाईयों की चर्चा गरुड़ पुराण और विष्णु पुराण में भी मिलती है। गाय के इस प्रकार के उपचार को पशु आयुर्वेद या गवायुर्वेद कहा

जाता है। प्राचीन भारत में गायों की बीमारियों एवं उपचार पर अनेक पुस्तकें लिखी गयी हैं।

गायों में अनेक बीमारियाँ पायी जाती हैं जैसे गर्भावस्था से जुड़ी हुई समस्या, आंखों की बीमारी, गर्भ में बछड़े की मृत्यु, पेट की सूजन, शारीरिक कंपन, मूत्र में समस्या, शरीर के बालों का सडना, कफ, हड्डी टूटना, बार-बार बेहोशी, खुरपका और मुंहपका आदि।

? क्या आप जानते हैं

प्राचीन भारतीय लोग गाय की बीमारियों के बारे में जानते थे। उन्हें उपचार हेतु अनेक जड़ी बूटी और पौधों की जानकारी थी। कहा जाता है कि, पांडवों में से एक सहदेव ने पशु आयुर्वेद पर पुस्तक लिखी है। अन्य लेखक हैं-ऋषि गौतम, ऋषि पराशर और राजा भोज।

गौशाला में दिए जलाए जाते हैं तथा अनेक प्रकार की पूजा-अर्चना की जाती है। इसका उद्देश्य गौशाला को साफ और स्वच्छ बनाने हेतु किया जाता है। यह पूजा गायों की सुरक्षा हेतु की जाती है। यह माना जाता है कि मंत्रोच्चार का गाय पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अनेक प्रार्थनाएं गायों की सेहत अच्छी रखने के लिए की जाती है। कुछ ग्रंथ गायों की गर्भावस्था में आने वाली समस्याओं के उपचार पर चर्चा करते हैं। दूर्वा घास को गाय के सींगों पर बांधा जाता है। गायों की सींगों को नीला या लाल रंग से लेपा जाता है। ऐसा करने से गायों पर चोरी होने का डर कम हो जाता है। यह भी माना जाता है कि बुरी नजर से बचाने के लिए गायों के गले में नारियल का खोल बांधा जाता है।

चुवंडराय द्वितीय (Chavundarya II) द्वारा 1025 A/D (1025 ईसवी) में लिखा गया लोकोपकार कर्नाटक का एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है। यहां गायों के इलाज हेतु एक पूरे खंड का विवरण है। यहाँ गायों का दूध बढ़ाने के लिए

परंपरागत दवाईयों का वर्णन किया गया है। भारत की कुछ जनजातियों को परंपरागत दवाईयों की अच्छी जानकारी है। इनमें से कुछ दवाईयां का तो प्रलेखन (documentary) बाकी है। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी लोक मान्यताएं प्रचलित हैं।

? क्या आप जानते हैं

किसानों, बड़े-बुर्जुगों और मित्रों की सहायता से अपने आस पास गायों को दी जाने वाली प्राथमिक चिकित्सा (first aid) की सूची बनाइए। गायों की खरीद-फरोखत से जुड़ी हुई अनेक मान्यताएं हैं। विभिन्न कृषि समुदाय गायों को उनके रंग, विशेषता, आदत तथा उपयोग के आधार पर खरीदते हैं।

पाठगत प्रश्न 8.4

1. उन ग्रंथों का नाम बताइए जो गाय के उपचार हेतु दवाईयों पर चर्चा करती हैं?
2. पशु आयुर्वेद पर किसने पुस्तक लिखी है?
3. गायों के सींगों में किस पौधे को बांधाा जाता है?
4. प्राचीन कर्नाटक की वह पुस्तक तथा उसके लेखक का नाम बताइए जो गाय की बीमारियों पर आधारित है?

आपने क्या सीखा

- कैसे प्रीतम ने गायों के बारे में रामू काका से जाना।
- प्राचीन भारतीय ग्रंथ जो गायों से जुड़े हुए हैं।

- गायों की बीमारियों के बारे में चर्चा करने वाले ग्रंथ।
- गाय की विशेषताएं।
- अच्छी गायों के गुण।
- गाय का दूध दुहने के नियम।
- गाय के उत्पाद, उनके गुण और प्रयोग।
- गायों की सुरक्षा
- गायों की बीमारियाँ और उनके उपचार

पाठांत प्रश्न

1. हम गाय की पूजा क्यों करते हैं?
2. महाभारत में कौरवों ने गायों को बंदी क्यों बनाया था?
3. गायों के दूध दुहने के नियम किस ग्रंथ में मिलते हैं?
4. गायों का दूध क्यों दुहने की आवश्यकता है?
5. गायों को किस प्रकार दुहा जाता है?
6. गाय को दुहने के कौन से नियम हैं?
7. छाछ को क्यों मथा जाता है?
8. उन उपायों को सूचीबद्ध कीजिए जो आपके पास की गौशाला में गायों को सुरक्षित रखते हैं?
9. बछड़े का मां गाय से किस प्रकार संपर्क कराया जाता है?
10. गाय के पैर के उपचार हेतु गांव वालों ने क्या किया था?

उत्तरमाला

8.1

1. ऋग्वेद, यजुर्वेद, मैत्रीय संहिता, धर्मसूत्र
2. भगवत् पुराण
3. कामधेनु
4. गौशाला
5. अग्नि पुराण, गरुड़ पुराण और विष्णु पुराण

8.2

1. गोपाल
2. गौशाला
3. पंचगव्य
4. घी
5. छाछ
6. मां पृथ्वी

8.3

1. दीपावली (अमावस्या के पश्चात्) पहले दिन पर ग्रामीण गायों को सजाकर उनकी रस्सी की पूजा करते हैं। गायों को बांधकर उनके अंगों की भी पूजा की जाती है। अलग-अलग अंगों के साथ लोकगीत गाए जाते हैं। गांव का चक्कर लगाकर बीमारियों के उपचार हेतु गाय को मंदिर में भगवान, बरगद के पेड़ अथवा पहाड़ के चहुं ओर घुमाया जाता है।
2. बरगद के पेड़

8.4

1. गरुड़ पुराण और विष्णु पुराण
2. सहदेव
3. दूर्वा
4. चवुंडराय द्वितीय (1025 ईसवी) का लोकोपकार